वर्ष :: 33 अंक : 10
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 04 दिसंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

ठहरिए, ये मौत की डगर है!

जानलेवा अनदेखी... बस खानापूर्ति के लिए होती हैं सड़क सुरक्षा समिति की बैठकें, बातें बड़ी-बड़ी, काम शून्य

बोकारो में मजाक बनी रोड सेफ्टी

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : सरकारी व्यवस्था और कामकाज की शिथिलता किसी ने नहीं छुपी है। शायद ही कोई ऐसी योजना होगी, जो समय पर धरातल पर उतर पाती होगी। अधिकतर योजनाएं कहीं न कहीं लापरवाही, ढुलमुल स्थिति और स्वार्थपूर्ति का जरिया बनी हैं। लेकिन, जब यह लापरवाही लोगों की जान पर बन आए, तो इसे खतरनाक ही नहीं, बेहद शर्मनाक और एक अपराध भी कहें, तो शायद कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बोकारो में सड़क सुरक्षा और इससे लोगों की जानमाल की रक्षा को लेकर तैयार योजनाओं की यही कुस्थिति है। हर दो-चार महीने पर सड़क सुरक्षा समिति की बैठक होती है।

इसमें माननीयजन आते हैं। खूब बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, प्लानिंग तैयार होती है। यहां ये करना है, वहां ये करना है, लेकिन आज तक हुआ कुछ भी नहीं। बैठक के बाद न तो माननीयजनों को याद रहता और न ही अफसरों को। यह सिलसिला वर्षों से लगातार जारी है। लिहाजा, आज भी बोकारो की सड़कें मौत की डगर बनी हैं। शायद ही ऐसा कोई दिन होगा, जब सड़क दुर्घटना न होती होगी। हर दो-चार दिन के अंतराल पर लोग असमय सड़क हादसे का शिकार होकर अपनी जान गंवा बैठते हैं।

एनएच- 23 पर 18, तो एनएच- 32 पर 7 अवैध कट

सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में राष्ट्रीय उच्चपथ पर बने अवैध कट को बंद करने पर हर बार चर्चा जरूर होती है, परंतु किया कुछ नहीं जाता। जानकारी के अनुसार बोकारो में एनएच 23 पर 18 अवैध कट हैं। वहीं हाइवे संख्या 32 पर सात अवैध कट हैं। कई बार इन अवैध कट से वाहन आते जाते हैं और इसी वजह से हादसे होते हैं। इन सबके बाद भी इसे बंद नहीं किया गया। जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में हाईवे किनारे अतिक्रमण भी कई बार मुख्य मुद्दा रहा है। हाइवे के अधिकारियों को इस बाबत निर्देश भी मिले, लेकिन एक इंच भी अतिक्रमण नहीं हट सका।

चर्चा का विषय रही हैं ये जरूरतें

- अवैध कट बंद करना।
- हाइवे पर शत-प्रतिशत ब्लिंकर लाइट नहीं जल रहे।
- ट्रैफिक लाइट लगाना।
- नगर निगम इलाके पार्किंग की सही व्यवस्था का अभाव।
- जिला अंतर्गत सभी ब्लाइंड स्पॉट को चिह्नित करना।
- आवश्यक साइनेज लगाना।
- सड़क सुरक्षा पर नियमित जागरूकता कार्यक्रम।
- ट्रांसपोर्ट नगर।
- रेलवे फाटक के अंडर पास के समीप रंबल स्ट्रिप।
- रेडियम टेपयुक्त स्पीड ब्रेकर, आदि।

एनएच-23 पर सबसे ज्यादा हादसे, हर माह आधा दर्जन लोगों की होती है मौत

बोकारो में सबसे अधिक सड़क हादसे एनएच-23 पर होते हैं। हर महीने औसतन 15 हादसे होते हैं। इनमें लगभग आधा दर्जन लोगों की मौत हो जाती है। खासकर, टांड़ बालीडीह टोल प्लाजा से पेटरवार के चरगी सीमा के बीच सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। कहीं भी रोड सेफ्टी का कोई इंतजाम नहीं है। बीते चार वर्षों से इस सड़क पर ट्रॉमा सेंटर बनाने की बस चर्चा ही चल रही है, अब तक राज्य सरकार ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। सिविल सर्जन के स्तर से कथित तौर पर प्रस्ताव भेजा जाता है, परंतु मामला हर बार ठंडे बस्ते में चला जाता है। जानकारी के अनुसार तीन महीने पूर्व वर्तमान सिविल सर्जन ने राज्य सरकार के पास ट्रॉमा सेंटर के लिए प्रस्ताव भेजा है। जैनामोड़ के आसपास एनएच किनारे जमीन की तलाश भी शुरू की गई, पर मिली नहीं। फलस्वरूप कुछ काम आगे नहीं बढ़ सका। बता दें कि बोकारो जिले से दो एनएच और पांच स्टेट हाइवे गुजरती है, लेकिन यहां एक भी ट्रॉमा सेंटर नहीं है। टांडबालीडीह से पेटरवार के चरगी के बीच 25 किलोमीटर के अंदर सड़क हादसे होते हैं। तो उन्हें नजदीक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाया जाता है। पेटरवार के 10 किलोमीटर इलाके के हादसे के बाद पेटरवार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और जरीडीह और कसमार इलाके में एनएच पर हादसा होने पर जैनामोड़ रेफरल अस्पताल ले जाया जाता है। जहां पर घायलों का इलाज ही हो पाता है। जबकि जो अधिक गंभीर होते हैं, उन्हें दोनों स्थानों से फस्ट एड के बाद सदर अस्पताल भेजा जाता है। उसके बाद जब मरीज की हालत गंभीर हो जाती है, तो फिर उसी रास्ते से वापस रांची भेजा जाता है। ऐसे में काफी वक्त बर्बाद हो जाता है और घायल की मौत तक हो जाती है।

तकनीक सेंसर की मदद से खुद-ब-खुद चार हिस्सों में अलग हो जाएगा कचरा, डिब्बा भरते ही मिल जाएगी सूचना

स्मार्ट फोन और स्मार्ट टीवी के बाद अब आई स्मार्ट बिन

डीपीएस बोकारो के छात्र उत्कर्ष ने नवोन्मेषता से बनाई अपनी राष्ट्रीय पहचान

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : स्मार्ट फोन और स्मार्ट टीवी तो आज के दौर में जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। लेकिन, स्मार्ट बिन के बारे में शायद ही आपने सुना होगा। जी हां, यह स्मार्ट कूड़ेदान अपने-आप में स्मार्ट है। ऐसा इसलिए कि इसे ऐसी तकनीक से तैयार किया गया है कि इसमें कचरा खुद-ब-खुद चार अलग-अलग हिस्सों में बंट जाता है। जैविक, अजैविक, गीला और पुनर्चक्रीय कूड़े अपने-अपने खाने में चले जाते हैं। इतना ही नहीं, कूड़ेदान भरने पर स्वयं ही यह स्मार्ट बिन रखने वाले गृहस्वामी अथवा निगम प्राधिकार को इसकी सूचना भेज देगा। इससे फायदा यह होगा कि कचरे अब कूड़ेदान के आसपास गिरे पड़े नहीं होंगे और न ही उनके आसपास गाय, सूअर आदि गंदगी फैलाते दिखेंगे। यह अनूठा कूड़ेदान बनाया है डीपीएस बोकारो में 10वीं कक्षा के छात्र उत्कर्ष राज ने।

इस उत्कृष्ट नवोन्मेषता के लिए उत्कर्ष का चयन भारत सरकार की महत्वाकांक्षी इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के लिए किया जा चुका है और उसने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी खास पहचान बना पाने में कामयाबी पाई है। इसके लिए उसे मॉडल तैयार करने को लेकर बाकायदा 10 हजार रुपए की सहायता सह प्रोत्साहन राशि भी मिल चुकी है। फार्मा कंपनी में काम करने वाले सेक्टर-6ए निवासी राकेश कुमार सिन्हा के पुत्र उत्कर्ष ने बताया कि अपने घर के आसपास डिब्बे से बाहर गिरे कूड़े और उससे होने वाले गंदगी, बदबू देखकर उसने इस समस्या के निदान को लेकर सोचा। तकनीक की मदद से इसका समाधान करने का आइडिया उसे सूझा, जिसके बारे में उसने अपने विद्यालय के शिक्षक अब्दुल्ला से बात की।

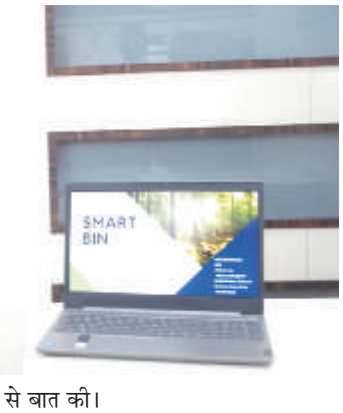

उन्होंने उसके आइडिया को सराहा तथा अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। लगभग ढाई हजार रुपए खर्च कर उसने सेंसर, माइक्रोचिप, इंटरनेट कनेक्टिविटी आदि से तैयार एक यांत्रिकी तैयार की और कूड़ेदान में लगाया।

जानिए... ऐसे काम करती है स्मार्ट बिन

कूड़ेदान में कचरा गिराने के बाद सबसे पहले वाले सरफेस में लगा सेंसर उसे नीचे वाले चार अलग-अलग चेंबरों में पृथक कर देता है। कुल चार सेंसर इसके लिए स्मार्ट बिन में लगे हैं। सेंसर द्वारा सूचना भेजे जाने के बाद लगे मोटर की मदद से स्वतः कूड़ेदान की ढक्कन खुलता और बंद होता है। जब कूड़ेदान भर जाता है, तो सेंसर और चिप की मदद से कूड़ेदान लगाने वाले गृहस्वामी या निगम अथॉरिटी को आईबीएम क्लाउड पर सूचना मिल जाएगी। उत्कर्ष की दिली ख्वाहिश आगे चलकर एक आईएएस अधिकारी बनने की है।

- संपादकीय -

बेचैन हुआ ड्रैगन

भारत और अमेरिका की बढ़ती नजदीकियां देखकर चीन इन दिनों खास बेचैन दिख रहा है। ऐसे समय में जब चीन की सीमा के निकट उत्तराखंड में भारत और अमेरिका की सेनाओं का ताजा सैन्य अभ्यास चल रहा है, ड्रैगन इसे लेकर खासतौर से बेचैन है। यही नहीं, चीन ने अमेरिका को चेताया है कि हम भारत के साथ अपने मुद्दे खुद सुलझा लेंगे, अमेरिका इसमें दखल न दे। ड्रैगन देश की यह बेचैनी खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली कहावत को चरितार्थ कर रही है। चीन की इस बेचैनी की वजह हाल में अमेरिकी कांग्रेस के लिए तैयार पेंटागन की नवीनतम रिपोर्ट भी है, जिसमें चीन की रक्षा तैयारियों से उत्पन्न चुनौतियों की चर्चा है। यह भारत और अमेरिका सहित दुनिया की चिंता बढ़ाने वाली है। तभी चीनी अधिकारियों ने अपने अमेरिकी समकक्षों को नई दिल्ली के साथ बीजिंग के संबंधों में हस्तक्षेप न करने की चेतावनी दी है। कहा गया है कि चीन भारत के साथ रिश्तो में अमेरिकी दखल को गैरजरूरी मानता है। यह भी कहा गया है कि चीन भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं तथा सीमा गतिरोध को दूर करने की इच्छा रखता है। वहीं, भारत का मानना है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखे बिना समग्र संबंधों को सामान्य नहीं किया जा सकता है। वस्तुतः, वास्तविक नियंत्रण रेखा से 100 किलोमीटर दूर उत्तराखंड में भारत और अमेरिका सैनिकों का साझा अभ्यास चल रहा है और इसे लेकर चीन ने अपनी कड़ी आपत्ति जताई है। ऐसी ही प्रतिक्रिया चीन ने उस समय भी दी थी जब अमेरिकी सेना के पैसिफिक कमांडिंग जनरल ने पूर्वी लद्दाख स्थित एलएसी पर चीन द्वारा संरचनात्मक निर्माण को खतरनाक बताया था। यहां तक कि चीनी विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी अधिकारियों पर आग में घी डालने तक का आरोप लगाया था। साथ ही, अमेरिका को चेताया था कि बीजिंग और नई दिल्ली बातचीत से अपने मतभेदों को दूर करने की क्षमता और इच्छाशक्ति रखते हैं। यानी अमेरिका को इसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं है। निश्चित रूप से यह चीन की दोहरी रणनीति का ही हिस्सा है। यह सर्वविदित है कि चीन की कथनी और करनी में अंतर हमेशा से ही रहा है। हकीकत और बयानबाजी के अंतर को पाटने में वह विफल रहा है। जमीनी स्तर पर उत्पन्न विसंगतियों को दूर करने की कोई ईमानदार कोशिश चीन की तरफ से होती नजर नहीं आ रही। जब बातचीत की प्रक्रिया शुरू होती है तो उसका रवैया अड़ियल ही रहा है। यहां तक कि दोनों देशों के सैन्य कमांडरों ने पिछले दो वर्षों में 16 दौर की बातचीत की है। इसके बावजूद कई विवादित स्थलों से चीनी सैनिकों की वापसी का मुद्दा अब तक लटका पड़ा है। इस बात का चीन को अहसास होना चाहिए कि भारत के साथ उसके संबंधों में भरोसे की कमी के चलते ही वाशिंगटन को नई दिल्ली के साथ रक्षा और सामरिक सहयोग को मजबूत बनाने का अवसर मिला है। आज अमेरिका भारत को उस क्षेत्र में एक मजबूत सहयोगी के रूप में देखता है, जो साम्राज्यवादी चीन के निरंकुश व्यवहार पर अंकुश लगाने में सहायक हो सकता है। अब समय आ गया है कि भारत को सीमा गतिरोध को समाप्त करने की दिशा में शिथिल रवैया को खत्म करने के लिए चीन को विवश करना चाहिए और भारत की बढ़ती ताकत कहीं- न-कहीं इस दिशा में एक सकारात्मक उम्मीद की किरण जगाती है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

लोकतंत्र में पार्टीवाद की चुनौतियां

- अभिषेक आनंद -

भारतीय बहुदलीय प्रणाली की विशेषता यह है कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियां राजनीतिक प्रक्रिया में अपनी प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित कर सकते हैं। अर्थात समाज के हर वर्ग के प्रतिनिधित्व करने का दावा किया जा सकता है, क्योंकि भारत एक विविधता पूर्ण राष्ट्र है। यहां अनेक प्रकार के लोग रहते हैं, अनेक जातियां हैं, विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं, अनेक पहचान समूह है। हर वर्ग की अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा भी है। बहुदलीय प्रणाली में उन्हें उचित प्रतिनिधित्व की संभावनाएं भी हैं।

बहुदलीय प्रणाली की अपनी खामियां भी हैं। जाति और स्थानीय पहचान पर की जाने वाली राजनीति जाने-अनजाने राष्ट्रीय हित और सामाजिक समरसता को नुकसान पहुंचाती है, व्यवहार में छोटे दल अपने वर्ग के हितों को खूंटी में टांगकर व्यक्तिगत स्वास्थ्य हेतु राजनीतिक सौदेबाजी में लग जाते हैं। दुनिया की अनेक राजनैतिक व्यवस्था और प्रणालियों का अध्ययन करके हमने अपने काम लायक चीजें जमा की है। इन व्यवस्थाओं का मूल्यांकन करना हमारे लिए जरूरी है।

लंबे समय तक हमारे यहां एक ही पार्टी का वर्चस्व और बोलबाला रहा। कांग्रेस पार्टी को लगभग 20 साल तक कोई चुनौती नहीं मिली। जातिवादी राजनीति के उदय के साथ कांग्रेस पार्टी लगातार कमजोर होती गई। जिन जातियों का प्रतिनिधित्व कांग्रेस पार्टी में कम था उन जातियों को जातिवादी राजनीति में राजनैतिक मंच और आवाज दोनों दिया क्षेत्रीय और जातिगत पार्टियों ने। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही भूमिका एक साथ निभाया। भाजपा के उदय ने फिर यह भी साबित किया कि समाज की राजनैतिक महत्वाकांक्षा सिर्फ जातिगत या क्षेत्रीय नहीं होती, वह राष्ट्र के तौर पर और राष्ट्र की संस्कृति को भी महत्वपूर्ण मानते हुए भी अपनी राजनैतिक इच्छाएं प्रकट करता है। पार्टी बंदी भारतीय राजनीति की बड़ी चुनौती है। जब राजनीतिक पार्टी जनता के प्रतिनिधि के अधिकारों का हनन करें और जनता का प्रतिनिधि पार्टी के हित के सामने बौना नजर आए, तो यह लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं। राजनीतिक पार्टियां अपनी पूरी ऊर्जा चुनाव जीतने और अपना प्रचार करने में लगाती हैं। अगर जनता के प्रतिनिधि पार्टियों के प्रति अपनी निष्ठा को जनता के प्रति निष्ठा से ऊपर मानते हैं, तो यह लोकतंत्र के लिए अच्छा नही। विधायक या सांसद जनता के प्रतिनिधि अगर अपने पार्टी नेता के सामने समर्पण की मुद्रा में रहें, तो यह लोकतंत्र के लिए शुभ समाचार नहीं। जनता के प्रतिनिधि को जनता के प्रति समर्पित और जवाबदेह होना चाहिए न कि पार्टी के प्रति पार्टी अनुशासन के नाम पर राष्ट्रीय हित के विषयों पर भी सांसदों को बोलने से रोका जाता है। प्रतिनिधियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति संवाद और विचार करने की योग्यता को पार्टी बंदी ने प्रभावित किया। स्वतंत्र चिंतन, विचार व अध्ययन करने की अगर योग्यता हमारे प्रतिनिधियों में नहीं होगी या विकसित नहीं होने दी जाएगी, अगर उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिया जाएगा तो यह जनता के अधिकारों का हनन होगा और लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं माना जा सकता। क्योंकि, लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधि के माध्यम से ही शासन करती है। अगर जनता के प्रतिनिधि के अधिकार अगर संकुचित होंगे, तो जनता के अधिकार और लोकतंत्र में उनकी भागीदारी असहज हो जाएगी।

राजनीतिक पार्टियों के पार्टीवाद ने हमारे नैतिक चरित्र को भी प्रभावित किया है, हम सही-गलत की पहचान में भी राजनैतिक स्वार्थ और राजनीतिक पक्षपात देखते हैं। हम सत्य जानकर भी उसे अस्वीकार करते हैं, ताकि हमारे पार्टी को नुकसान न हो जाए या झूठ देखकर भी हम उसे नजरअंदाज कर देते हैं, क्योंकि उसमें हमारी पार्टी के नुकसान होने की संभावना है। अर्थात हमने उचित और अनुचित को भी पार्टी के नजर से देखना शुरू कर दिया है और यह प्रवृत्ति मात्र पार्टी नेताओं में नहीं, बल्कि उनके समर्थकों और वोटर तक आ चुकी है।

2008 के चुनाव में पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बराक ओबामा ने अमेरिकी जनता के साथ सीधा संवाद स्थापित किया। सोशल मीडिया के माध्यम से भारत में भी 2014 में नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं से सीधा संवाद स्थापित किया। फलस्वरूप नरेंद्र मोदी का कद कई मायनों में अपनी पार्टी से बड़ा हो गया है। आज के दौर में जब जनता नेताओं से सीधा संवाद कर सकती हैं, वह अपने प्रतिनिधियों के साथ भी सीधा संवाद स्थापित कर सकती ऐसे में जरूरी है कि पार्टियों की जिम्मेदारियां कम की जाएं, ताकि जनता सीधा संवाद और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में ज्यादा सक्रिय हो सके।

लोकतंत्र क्योंकि जनता का शासन है और यह संभव नहीं कि करोड़ों की संख्या में लोग हर विषय पर इकट्ठा होकर निर्णय लें, इसीलिए राजनैतिक पार्टियों की भूमिका तय की गई है, पार्टियों का काम है कि वह जनता की इच्छाओं को उनकी समस्याओं को रेखांकित करें, उन्हें व्यक्त करें, नीतियां बनाएं और वह देश में जागरण भी फैला सकते हैं और अगर सत्ता मिले तो इन नीतियों को लागू करें। राष्ट्रहित में नीतियों में समन्वय होना चाहिए कुछ मुद्दों पर जिनमें राष्ट्रीय सुरक्षा, शिक्षा स्वास्थ्य, सुशासन आदि शामिल हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका में राष्ट्रीय सुरक्षा विदेश नीति शिक्षा व्यवस्था इन विषयों पर पार्टी से उठकर सहयोग और समन्वय की परंपरा है। सभी महत्वपूर्ण विषयों पर राजनीतिक दलों में आपसी सहमति होनी चाहिए कि राष्ट्रहित प्रथम है और उसमें पार्टीबंदी या पार्टी राजनीति को दूर रखना चाहिए।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

मैथिली काव्यकृति

छथि लूटि मचौने कपट-भेष

- सुधीर कुमार झा, कोलकाता -

नेता जन-सेवक व्यापारी,
कार्यालय कोनो सरकारी।
नहिं बांचल छै साधारण जन,
नैतिकता के सभ ठाम पतन।
बिन घूसे कोनो काज कहां!
छै भ्रष्टाचार भरल सभ ठां।
जन जन मत दए पद भार देलक,
जन प्रतिनिधि बनलाह जन सेवक।
आह! भाग्य जन जन जागल,
जन प्रतिनिधि सेवा में लागल।
भ'रथि निज गृह नित मेवा सं,
जन जन छथि गद्गद् सेवा सं।
खूब करै छथि घोटाला,
जन जन के करथिन्ह दैव भला।
प्रतिस्पर्धा छै चलि रहलै,
घोटाला केकर बीस रहलै।
नहिं राशि घोटाला आब लाख,
छै कोटि-कोटि के भेटैक थाक।
राशि घोटाला कम जिनकर,
होइछ प्रतिष्ठा कम हुनकर।
एहि में नहिं हिनकर सभक दोष,
हिनका सभ पर ने करी रोष।
पाइअक मूल्यक छैहे नियम,
समयानुसार होइते छै कम।
म'हग भ रहलै बस्तु जात,
कम होइन्ह ने हिनकर ठाठ बाट।
तें हिनक घोटाला नहिं अनुचित,
राशि घोटाला से समुचित।
जय हो जय हो जय जय श्रीमंत,
जय हो जनसेवक महासंत।
जन जन के जनतब इमनदार,
पड़िते छापा होइ छथि देखार।
बुझथिन्ह जे हिनके सभक देश,
छथि लूटि मचौने कपट-भेष।
केओ केलक घोटाला देश छोड़ल,
ने भागि सकल जे,एतहि पड़ल।
केकरो अछि जेले बनल घर,
केओ अपने घर जमानत पर।
किन्तु ने सभ अधलाहे छथि,
किछु नैतिकता के बाटे छथि।
जे जेहेन करए तेहने पाबए,
तें करी एहेन सभ यश गाबए।
नीकक आसे अछि मन अहलाद,
राक्षसहिं कुले भेलाह प्रहलाद।

लोगों के प्रेम का समर जीत चले गए समरेश

दादा... स्मृति शेष : पूर्व मंत्री के निधन से चौतरफा शोक की लहर, भाजपा को दिलाया था कमल का चुनाव-चिह्न

संवाददाता

बोकारो : बोकारो सहित झारखंड के राजनीतिक जगत में एक अध्याय अंत हो गया। लोगों के प्रेम का समर हमेशा से जीतने वाले समरेश सिंह जिंदगी का समर हार गए। सांस की बीमारी ने उन्हें हमेशा के लिए हम सबों से जुदा कर दिया। बोकारो से सबसे पहले विधायक (1977) और झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री स्व. सिंह की अब स्मृतियां ही शेष रह गई हैं। सेक्टर- 4 स्थित आवास में उनका निधन हो गया। वह पिछले कई दिनों से सांस की बीमारी से परेशान चल रहे थे। बीते 12 नवंबर को तबीयत अधिक बिगड़ने के बाद उन्हें पहले बीजीएच और फिर रांची स्थित मेदांता अस्पताल ले जाया गया था। वहां करीब 16 दिन रहने के बाद 29 नवंबर को ही वह बोकारो लौटे थे। उस समय डॉक्टर और स्वजनों ने उनकी हालत पहले से बेहतर बताई थी। एक सकारात्मक उम्मीद जगी थी कि दादा अब ठीक हो गए, परंतु किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन बाद ही उनका निधन हो गया। उनके निधन की खबर से राज्य के सियासी महकमे में शोक की लहर दौड़ गई है। उनके घर पर संवेदना जताने वालों का तांता लग गया। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई। जिले के चंदनकियारी प्रखंड स्थित देउलटांड़ में गवई नदी तट पर उनकी अंत्येष्टि में लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा। सभी ने नम आंखों से दादा को अंतिम विदाई दी। इसके पूर्व, स्व. समरेश की शवयात्रा सिटी सेंटर स्थित उनके आवास से शुरू हुई। सेक्टर-3 थाना मोड़, बिरसा चौक, सेक्टर-2 काली मंदिर, पत्थरकट्टा चौक, राम मंदिर, कैंप दो, चास चेक पोस्ट, पुराना बाजार, महावीर चौक, जोधाडीह मोड़, मामरकुदर, चंदनकियारी, अड़िता होते हुए देउलटांड़ शवयात्रा पहुंची। इस दौरान चास पुराना बाजार में सभी दुकानों के शटर बंद थे। जगह-जगह पर लोगों की ओर से फूलों की वर्षा की जा रही थी। लोगों ने नम आंखों से अपने जननेता को अंतिम विदाई दी। उनकी शव यात्रा जब नया मोड़ बिरसा चौक पर पहुंची तो वहां बेरमो विधायक जयमंगल सिंह ने पूर्व मंत्री समरेश सिंह को श्रद्धासुमन अर्पित किया। शव यात्रा निकलने के पहले उनके घर पर पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास, पूर्व मंत्री सरयू राय ने श्रद्धांजलि दी। चंदनकियारी में पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने श्रद्धासुमन अर्पित की। चंदनकियारी में हर लोग अपने जननेता के अंतिम दर्शन के लिए आतुर दिखे।

तिरंगे में लिपट विदा हुए 'दादा'

राजकीय सम्मान में जिला पुलिस के जवानों की ओर से 12 राउंड हवाई फायरिंग की गई। शवयात्रा के पहले जो तिरंगा ध्वज पार्थिव शरीर के ऊपर रखा गया था, उस तिरंगा को जवानों ने उठाकर एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत को सौंपा। उसके बाद एसडीओ ने उस ध्वज को उनके परिजनों को सौंप दिया। मुखाग्नि उनके सबसे छोटे पुत्र संग्राम सिंह उर्फ सोना ने दिया। उनके सम्मान में वायलिन बजाया गया। उसके बाद उलूक ध्वनि से उन्हें विदाई दी गई। उनके अंतिम संस्कार में सांसद पीएन सिंह, विधायक बिरंची नारायण, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, भाजपा नेत्री रागिनी सिंह, स्व. समरेश सिंह के बड़े पुत्र राणा प्रताप सिंह, दूसरे पुत्र सिद्धार्थ सिंह माना, डॉ परिंदा सिंह, श्वेता सिंह, झामुमो नेता संतोष रजवार, विजय रजवार सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

व्यवसायियों ने भी जताया शोक

स्व. समरेश के निधन के शोक में चास चेकपोस्ट से महावीर चौक तक मेनरोड, चास के व्यवसायियों ने अपनी-अपनी दुकानें शोक में बंद रखीं। बता दें कि दादा के राजनीतिक जीवन की शुरुआत मेनरोड चास से ही हुई थी। अपनी पत्नी भारती सिंह और बच्चों के साथ मेनरोड में किराए के मकान में रहकर बोकारो के विस्थापितों के हक के साथ छात्रों, किसानों व मजदूरों के आंदोलन की शुरुआत की थी। इसलिए पुराना बाजार मेनरोड के लोगों का दादा के साथ गहरा लगाव रहा है। चेंबर भवन के सामने चेंबर सदस्यों ने समरेश सिंह के पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। सदस्यों ने कहा कि चेंबर के साथ दादा का गहरा लगाव था।

भाजपा के थे संस्थापक सदस्य

गौरतलब है कि समरेश सिंह बीजेपी और जेवीएम से विधायक चुने गये थे। झारखंड अलग राज्य बनने के बाद वे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री बने। स्व. सिंह भाजपा के संस्थापक सदस्य थे। मुंबई में 1980 में आयोजित भाजपा के प्रथम अधिवेशन में कमल निशान का चिह्न रखने का सुझाव इन्हीं का था, जिसे केंद्रीय नेताओं ने मंजूरी दी थी. दरअसल समरेश को 1977 के चुनाव में कमल निशान पर ही जीत मिली थी। बाद में समरेश भाजपा से 1985 व 1990 में बोकारो से विधायक निर्वाचित हुए। इससे पहले 1985 में समरेश सिंह ने इंदर सिंह नामधारी के साथ मिलकर भाजपा में विद्रोह कर 13 विधायकों के साथ संपूर्ण क्रांति दल का गठन किया था, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद संपूर्ण क्रांति दल का विलय भाजपा में कर दिया गया। समरेश सिंह को अविभाजित बिहार के समय से दादा के नाम से जाना जाता था। समरेश सिंह की इच्छा धनबाद लोकसभा से सांसद बनने की थी, लेकिन वह कभी पूरी नहीं हो पाई। उन्होंने राष्ट्रीय जनता दल के टिकट से भी धनबाद से लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन महज कुछ वोटों के अंतर से चुनाव हार गए। वर्ष 1995 में समरेश सिंह ने भाजपा से टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय चुनाव लड़ा था, जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। इसके बाद वर्ष 2000 का चुनाव उन्होंने झारखंड वनांचल कांग्रेस के टिकट पर लड़ा। फिर 2009 में झाविमो के टिकट पर विधायक बने। बाद में भाजपा में शामिल हो गये, लेकिन 2014 में भाजपा का टिकट नहीं मिलने पर वह निर्दलीय लड़े थे। जिसमें उन्हें हार मिली थी।

जब कुर्ता फाड़कर जताया था विरोध

समरेश सिंह शुरू से ही अपने कद्दावर तरीके से आंदोलनों के लिए जाने जाते रहे हैं। विस्थापन समस्या को लेकर 03 सितंबर 2012 को झारखंड विधानसभा मानसून सत्र के दूसरे दिन उन्होंने कुर्ता फाड़कर जिस कदर सीना तान खड़े हो गए थे, उनकी छवि आज भी सियासी हलके में लोगों की जेहन में जिंदा है। दादा उस वक्त झारखंड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक) के विधायक थे। तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष सीपी सिंह के आसन के समीप जाकर उन्होंने अपना कुर्ता फाड़ते हुए कहा था- 'गोली चलानी है तो सबसे पहले मेरे सीने में चलाओ गोली। जनता का हित सर्वोपरि है।' उन्होंने बैनर पहन रखा था जिसमें लिखा था, ''एचईसी, नागा बाबा खटाल, इस्लामनगर, रूगडी गढा, ईसीएल, बीसीसीएल, बोकारो स्टील प्लांट एवं अन्य जगहों पर बसे गरीबों की झोपड़ी को वैद्यता प्रदान करो।''

थम गए 'इंद्रप्रस्थ' और 'महासंग्राम' जैसे शब्द – संग्राम नहीं, महासंग्राम होगा। बोकारो को इन्द्रप्रस्थ बनाएंगे। ये ऐसे शब्द थे, जो दादा की जिंदादिली और बुलंदी का परिचायक थ। क्या पुलिस, क्या प्रशासन सारे अधिकारी समरेश दा के आंदोलन के नाम से ही कांप जाते थे। कानून-व्यवस्था बनाए रखना उनके लिए समस्या हो जाती थी। दुर्भाग्यवश, अब ऐसे शब्द हमेशा-हमेशा के लिए थम गए।

स्वावलंबन की पहल हस्तशिल्प प्रशिक्षण के लिए एलआईएमएस-ईएसएएफ, दुमका के साथ एमओयू पर हुआ हस्ताक्षर

ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को स्वरोजगार के अवसर देगी बीएसएल

संवाददाता

बोकारो : बोकारो के परिक्षेत्रीय गावों में महिलाओं और युवाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बोकारो स्टील प्लांट द्वारा अपने सीएसआर के तहत बीआईवी सेक्टर 2डी स्कूल में आगामी 15 दिसम्बर से एक हैंडीक्राफ्ट प्रशिक्षण केंद्र की शुरूआत की जा रही है। जलकुंभी, बांस आदि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों के इस्तेमाल से हैंडीक्राफ्ट में प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु बोकारो स्टील प्लांट तथा एलआईएमएस-ईएसएएफ, दुमका के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। समझौता ज्ञापन में बीएसएल की ओर से महाप्रबंधक (सीएसआर) सीआरके सुधांशु तथा एलआईएमएस-ईएसएएफ की ओर से एसोसिएट डायरेक्टर डॉ अजितसेन सेल्वादास ने हस्ताक्षर किये। बोकारो निवास में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) संजय कुमार, अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक (सामग्री प्रबंधन) श्री अमिताभ श्रीवास्तव, अधिशासी निदेशक (परियोजनाएं) चितरंजन महापात्रा, अन्य वरीय अधिकारी, परिक्षेत्रीय गावों की मुखिया एवं जन प्रतिनिधि तथा एलआइएमएस-इएसएएफ फाउंडेशन के अधिकारी उपस्थित थे।

200 से 600 ग्रामीण होंगे प्रशिक्षित : बोकारो स्टील के संचार प्रमुख मणिकांत धान के अनुसार हैंडीक्राफ्ट प्रशिक्षण केंद्र में प्रथम बैच में 200 ग्रामीणों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा गया है जो मार्च, 2023 तक पूरा हो जाएगा। उसके पश्चात 2023-24 में कुल 600 स्थानीय ग्रामीण महिलाओं और पुरुषों को प्रशिक्षण देने की योजना है।

बोकारो को हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट सेंटर के तौर पर मिलेगी नई पहचान : डीआई

उल्लेखनीय है कि एलआईएमएस-ईएसएएफ फाउंडेशन, दुमका का हैंडीक्राफ्ट के क्षेत्र में उत्पादन, प्रशिक्षण और मार्केटिंग का व्यापक अनुभव है। संस्था के विशेषज्ञों द्वारा हैंडीक्राफ्ट प्रशिक्षण केंद्र में इसी माह ट्रेनिंग शुरू कराई जाएगी, जिसकी तैयारियां युद्ध स्तर पर जारी है. प्रशिक्षण केंद्र में ही यहां निर्मित हैंडीक्राफ्ट आइटम की बिक्री हेतु एक शो रूम भी खोला जा रहा है। एमओयू के हस्ताक्षर के मौके पर निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने हैंडीक्राफ्ट आइटम्स की गुणवत्ता को विश्वस्तरीय बताते हुए विश्वास जताया कि इसके माध्यम से न केवल ग्रामीण महिलाओं और युवाओं के लिए स्व-रोजगार का मार्ग प्रशस्त होगा, बल्कि बोकारो को हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट सेंटर के तौर पर एक नई पहचान भी मिलेगी। उन्होंने उपस्थित मुखिया और जन प्रतिनिधियों से अपने अपने क्षेत्रों में लोगों को इस अवसर का लाभ उठाने को प्रेरित करने का आह्वान भी किया। अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी इस पहल की सराहना करते हुए सभी को शुभकामना दी। मुखिया और जन प्रतिनिधियों ने बीएसएल के इस पहल पर प्रसन्नता जाहिर की तथा अधिक से अधिक संख्या में ग्रामीणों को इससे जोड़ने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई।

कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों के कारण ही 75 वर्षों से टिका है डीवीसी : सुनील पांडेय

संवाददाता

बोकारो : अपने कर्तव्यनिष्ठ कर्मियों के कठोर परिश्रम के कारण डीवीसी आज 75 साल पूरा कर आगे बढ़ रहा है। डीवीसी के स्थापना-काल के समय या उसके बाद कई संस्थान बने, किंतु अधिकांश संस्थान या तो समाप्त हो गए या उनके नाम बदल दिए गए, किंतु हमारे देश में डीवीसी एक ऐसा संस्थान है जो 75 साल तक मुस्तैदी से खड़ा रहा और आज भी यह संस्थान अग्रेतर विकास करने की ओर बढ़ा हुआ है। यह कहना है कि डीवीसी सीटीपीएस (चंद्रपुरा थर्मल पावर स्टेशन) के मुख्य अभियंता सह परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय का। यहां के पांच कर्मियों की सेवानिवृत्ति पर आयोजित विदाई समारोह को वह बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डीवीसी ने देश के उत्थान में अहम योगदान दिया है। ये उपलब्धियां हमारे पूर्ववर्ती डीवीसीकर्मियों के ही कारण ही हैं।

सीटीपीएस की इकाई 7 - 8 के सम्मेलन कक्ष में आयोजित सम्मान समारोह में रिटायर हुए सभी कर्मियों को भावभीनी विदाई दी गई। सेवानिवृत्त कर्मियों में गणेश नोनिया, शिवनंदन कुमार, मो. शमी आलम, मोती मांझी, रास बिहारी यादव और उनके परिजनों ने भी डीवीसी के उत्थान में अपनी योगदान की भूमिका का विशेष वर्णन किया।

इस अवसर पर उप महाप्रबंधक प्रशासन टीटी दास, दिलीप कुमार, अजय कुमार सिंह, सतीश टोप्पो, फिरदौस अकरम, मिथिलेश सिन्हा, एमके झा, अशोक कुमार चौबे, अनिल कुमार, केएन सिंह आदि ने भी समारोह को संबोधित किया। सेवानिवृत्त कर्मियों को गुलदस्ता व उपहार भेंटकर मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सहित अन्य अधिकारियों ने सम्मानित किया। समारोह का संचालन प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने किया।

फूड लाइसेंस न मिलने से खाद्य व्यवसायी परेशान, 6 माह से कर रहे इंतजार

बोकारो : बोकारो के खाद्य व्यवसायी फूड लाइसेंस नहीं मिलने से काफी परेशान हैं। इनके व्यवसाय पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। इस समस्या को लेकर पिछले दिनों बोकारो चेंबर आफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक प्रतिनिधिमंडल खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी डॉ. श्वेता अमृता लकड़ा से उनके कार्यालय में मिला। चैंबर के संरक्षक संजय बैद ने डॉ. लकड़ा को बताया कि पचासों खाद्य व्यवसायियों ने कैंप के माध्यम से फूड लाइसेंस के लिए आवेदन दिया था, लेकिन 6 महीने बीत जाने के बावजूद अभी तक उन्हें लाइसेंस निर्गत नहीं हो सका है, जिसके कारण उन्हें कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है तथा राज्य को भी राजस्व की हानि हो रही है। बैद ने डॉ लकड़ा से प्रक्रिया में तेजी लाने का अनुरोध किया। चेंबर के उपाध्यक्ष अनिल गोयल ने कहा कि फोन के माध्यम से खाद्य व्यवसायियों को पैसे जमा कर जबरदस्ती ट्रेनिंग लेने के लिए कहा जा रहा है, जिस पर डॉ लकड़ा ने कहा कि विभाग द्वारा इस प्रकार का कोई भी फोन किसी भी व्यवसायी को नहीं किया जा रहा है। डॉ लकड़ा ने खाद्य व्यवसायियों को आगाह किया कि वह ऐसे किसी फोन को नजरअंदाज करें। डॉ लकड़ा ने यह भी बताया कि ट्रेनिंग का प्रोग्राम किसी भी खाद्य व्यवसायी को केवल एक बार करना है। उन्होंने चेंबर प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि लाइसेंस बनाने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। सचिव राजकुमार जायसवाल ने खाद्य व्यवसायियों की विभिन्न परेशानियों को डॉ लकड़ा के सामने रखा। चेंबर के महामंत्री सिद्धार्थ पारख ने कहा कि चेंबर विभाग को सहयोग करने हेतु पहले भी तत्पर रहा है और आगे भी रहेगा। प्रतिनिधिमंडल में संजय बैद, सिद्धार्थ पारख, अनिल गोयल, राजकुमार जायसवाल, हनुमान पिलानिया, मिंटू मंडल आदि उपस्थित थे।

अनदेखी सड़कें भी जगह-जगह हुईं क्षतिग्रस्त, आए दिन होते रहे हैं हादसे

आवासीय कॉलोनी में भारी वाहन फैला रहे प्रदूषण

संवाददाता

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल स्थित डीवीसी की आवासीय कॉलोनी से सारा दिन हाइवा की आवाजाही से कॉलोनीवासियों एवं स्कूली बच्चों एवं छोटे वाहन चालकों को काफी असुविधा सहित वायु प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। भारी वाहनों की गति इतनी तेज होती है कि दुर्घटना की संभावना बनी रहती है। साथ ही कॉलोनी का मेन रोड भी कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त हो गया है।

मामले को लेकर बोकारो जिला भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष श्रवण सिंह ने डीवीसी बीटीपीएस के एचओपी से कॉलोनी से हो रहे हाईवा के परिचालन से होने वाले प्रदूषण एवं सड़क के क्षतिग्रस्त होने पर रोक लगाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि विगत पांच वर्ष पूर्व कॉलोनी से भारी वाहनों, मसलन कोयला एवं छाई के हाईवा के परिचालन से आधा दर्जन से भी ज्यादा सड़क दुर्घटनाओं में लोगों एवं बच्चों को जान गंवानी पड़ी थी। लगातार हो रही दुर्घटनाओं एवं कॉलोनी में होनेवाले प्रदूषण के कारण सुबह एवं दोपहर स्कूल के समय पर तथा शाम में लोगों के बाजार आवाजाही के समय पर रोक लगा दी गयी थी।

उन्होंने कहा कि डीवीसी के ऐश पौंड से छाई लेकर खासमहल-कुरपनिया के रास्ते जानेवाला हाईवा वापसी में उसी रास्ते ना लौटकर कथारा एवं आवासीय कॉलोनी के मेन रोड होकर ऐश पौंड जाता है। इसके अलावा पावर प्लांट के लिए कोयला लेकर आनेवाले हाईवा को वापस ओवरब्रिज,कथारा, जारंगडीह के मार्ग से ही जाना होता है। परंतु सभी हाईवा कॉलोनी से शार्टकट रास्ता के द्वारा खासमहल लौटतें हैं। उन्होंने पूर्व की तरह उक्त अवधि में कॉलोनी से हो रहे हाईवा एवं भारी वाहनों पर रोक लगाने की मांग की है।

हफ्ते की हलचल

शिक्षा ही विकास का आधार : वाहिद खान

चास : चास के सुल्तान नगर स्थित नव प्राथमिक विद्यालय उर्दू चास- 3 में बच्चों के बीच ड्रेस का वितरण किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में चास नगर निगम के पूर्व उपाध्यक्ष अब्दुल वाहिद खान एवं मेयर प्रत्याशी उनकी पुत्री जेबा तरन्नुम उर्फ जूही थे। उन्होंने बच्चों के बीच पोशाक वितरित करते हुए शिक्षा की अहमियत बताई। वाहिद ने कहा कि शिक्षा मानवता और सभ्यता के विकास का मुख्य आधार है। एक शिक्षित समाज ही सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी भागीदारी निभा सकता है। मेयर पद की दावेदार जेबा ने कहा कि अगर चास की जनता ने उनका साथ दिया, तो वह शिक्षा व्यवस्था को चास में दुरुस्त कर एक नया अध्याय लिखने का हरसंभव प्रयास करेंगी। अब्दुल वाहिद ने कहा कि स्कूल में बाउंड्री की एवं गंदगी की समस्या है। इसे लेकर वह उच्च अधिकारियों से बात करेंगे तथा समस्याओं का समाधान करवाएंगे। उन्होंने अपने कार्यकाल में पानी, बिजली, सड़क आदि क्षेत्र में किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला।

संविधान दिवस पर सफल प्रतिभागियों को किया पुरस्कृत

बोकारो : जिले के जरीडीह बाजार स्थित अवध बिहारी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में संविधान दिवस के दिन बालिका व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के तहत सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन समाजसेवी सह- अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, मुखिया देवंती देवी, बेबी अग्रवाल, पुष्पलता देवी, प्रधानाचार्य कमलजीत सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में साड़ी प्रतियोगिता, नृत्य प्रतियोगिता, रूप सज्जा, मेहंदी प्रतियोगिता आदि के आयोजन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली बहनों को पुरस्कृत किया गया। इसमें ईशा कुमारी, सोनी कुमारी, निधि कुमारी, छाया, कनिष्का, अंतू, आशा, वर्षा आदि ने भाग लिया। सभी को प्रशस्ति पत्र दिया गया। मौके पर विद्यालय के सचिव अनिल अग्रवाल ने कहा कि पढ़ाई तो सभी विद्यालयों में होती है, परंतु संस्कार देने की बात सिर्फ शिशु मंदिर में ही होती है। प्रधानाचार्य ने आए हुए अतिथियों एवं आचार्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य सुरेश लाल, सुषमा जी, महेंद्र जी, शकुंतला, पिंकी, खुशबू, श्वेता, सुमित, धीरज, अरुण आदि का सराहनीय योगदान रहा। इस कार्यक्रम का संचालन रुबीना दीदी ने किया।

राष्ट्रपुरोधाओं के वेश में सजकर बच्चों ने दिया देशप्रेम का संदेश

बोकारो : डीपीएस चास में आयोजित दोदविसीय फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता शनिवार को संपन्न हो गई। दूसरे दिन की प्रतियोगिता का मुख्य विषय 'देश के गुमनाम देशभक्त एवं जलीय जीव संरक्षण' था। पहली कक्षा के बच्चों ने रंग-बिरंगे मनभावन परिधानों में उपस्थित होकर देश के प्रसिद्ध व गुमनाम देशभक्तों- महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरदार भगत सिंह, बिरसा मुंडा, सरोजिनी नायडू, पीर अली, अरुणिमा सिन्हा, भीखाजी कामा, ऊधम सिंह, तानाजी आदि के रूप में प्रस्तुति देकर उपस्थित दर्शकों को देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत कर दिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से बोकारो डीसी कुलदीप चौधरी की धर्मपत्नी एवं वरिष्ठ शिक्षाविद अपर्णा शुभ्रा सहित डीसी श्री चौधरी की माता प्रेम देवी व सास उषा रानी झा उपस्थित रहीं। अपने संबोधन में श्रीमती शुभ्रा ने बच्चों के प्रस्तुतीकरण की सराहना की, साथ ही उन्होंने राष्ट्रसेवा को सर्वोपरि एवं व्यक्ति का पहला कर्तव्य बताया। विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस मोहन ने अपने संदेश में कहा कि बच्चों के अंतर्मन में राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास नहीं हुआ तो वे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान नहीं दे सकते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से उनके मन-मस्तिष्क में देशभक्ति की भावना को जगाया जा सकता है। प्रभारी प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में डीपीएस चास के प्रयासों की चर्चा की। पहले दिन के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चास एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत थे।

बोकारोवासियों ने याद की भारतीय नौ-सेना की गौरव-गाथा

बोकारो : भारतीय नौ-सेना दिवस बोकारो में पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। सेक्टर-4 गांधी चौक के समीप हैप्पी स्ट्रीट के कार्यक्रम के दौरान शहरवासियों ने पूर्व सैनिकों के साथ मिलकर केक काटा और भारतीय नौ सेना की गौरवगाथा को याद कर गर्व की अनुभूति की। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद, बोकारो के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने देशवासियों को अपनी सेना की तरफ से विश्वास दिलाया कि हर परिस्थिति में नौसेना आपके सहयोग एवं अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील है। परिषद के प्रांतीय सचिव राकेश मिश्रा ने बताया कि इसी दिन साल 1971 में आपरेशन ट्राइडेंट के तहत नौसेना की मिसाइल स्क्वाड्रन ने न सिर्फ कराची बंदरगाह की सैन्य क्षमता को नष्ट किया था, बल्कि स्टेट ऑफ हारमुज को पूरी तरह से बंद कर दिया था, जो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था की लाइफलाइन थी।

चंद्रपुरा : जानलेवा हमले में घायल युवकों से मिले पूर्व सीएम रघुवर दास, कहा-

राज्य के आदिवासियों पर सबसे ज्यादा अत्याचार

संवाददाता

बोकारो : झारखंड सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दास ने शुक्रवार को केएम हॉस्पिटल जाकर चंद्रपुरा मे जानलेवा हमले का शिकार हुए आदिवासी समुदाय के युवकों से भेंट की। उनका हालचाल जाना तथा घटना की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने बेहतर इलाज के लिए अस्पताल प्रबंधन से आग्रह किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन के सरकार के तीन वर्ष पूरे होने को है। इन वर्षों में झारखंड ने हत्या, लूट, बलात्कार, अवैध खनन आदि के क्षेत्र में कई रिकॉर्ड बनाए। सरकार बनने के 15 दिन बाद ही चाईबासा में सात आदिवासी समुदाय के लोगों का निर्मम नरसंहार किया गया। राज्य में आदिवासी मुख्यमंत्री होकर भी राज्य के आदिवासी समुदाय सुरक्षित नहीं। राज्य के सभी जिलों मे प्रतिदिन आदिवासी समुदाय के लोगों पर हो रहे जुर्म की खबर अखबारों में प्रकाशित होती। आज राज्य की जनता के साथ आदिवासी समुदाय खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रही। हत्यारों व अपराधियों का बोलबाला राज्य में है। हेमंत सोरेन के कार्यकाल में झारखंड की विकास की गति रुक चुकी है। वोट बैंक, तुष्टिकरण के तहत एक वर्ग विशेष को संरक्षण यह सरकार संरक्षण दे रही है। रघुवर दास के साथ पीड़ितों से मिलने वालों में बोकारो विधायक सह मुख्य सचेतक (विरोधी दल), झारखंड विधानसभा बिरंची नारायण, भाजपा जिला महामंत्री संजय त्यागी, पूर्व बीस सूत्री जिला उपाध्यक्ष लक्ष्मण नायक, भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री अर्जुन सिंह, माथुर मंडल पन्नलाल कान्दू, विक्की लोहरा, झंटू दे, राजेश घोषाल, बुद्धेश्वर घोषाल, रणजीत बरनवाल आदि शामिल रहे।

चाय पीने को लेकर हुआ विवाद बन गया जानलेवा

गौरतलब है कि चंद्रपुरा रेलवे स्टेशन के बाहर रेलवे बैरक के समीप एक चाय की दुकान में चाय पीने को लेकर एक विशेष समुदाय के युवकों ने आदिवासी युवकों के साथ मारपीट की तथा टूटे हुए शीशे तोड़कर उसकी पेट एवं गले में घुसेड़ दिया और चाकूबाजी भी की। इस घटना में तीनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों को स्थानीय लोगों ने चंद्रपुरा डीवीसी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से उन्हें चिकित्सकों ने बोकारो जेनरल अस्पताल रेफर कर दिया। पुलिस ने घायल संतोष हांसदा के आवेदन पर चंद्रपुरा प्रखंड की प्रमुख चांदनी परवीन के पति मोहमद सनाहुल आलम, देवर मोहम्मद फिदाहुल, मोहमद आरिफ राज, मोहमद इकबाल और मोहम्मद शहजाद को नामजद अभियुक्त बनाया है।
उल्लेखनीय है कि इस घटना के विरोध में सोमवार को आदिवासियों ने बड़ी संख्या में एकजुट होकर चन्द्रपुरा थाना का घेराव किया था। उनके समर्थन में बजरंग दल के कार्यकर्ता भी सड़क पर उतर चुके थे।शहर के निमिया मोड़ पर आदिवासी समाज के लोग पारम्परिक हथियारों से लैस होकर धरना पर बैठ गये और प्रखंड प्रमुख चांदनी परवीन के खिलाफ नारेबाजी की थी। आदिवासियों की आक्रोशित भीड़ को देखते हुए बोकारो जिला मुख्यालय से अतिरिक्त पुलिस बल को बुलाना पड़ा।

निजीकरण के खिलाफ श्रमिक संगठनों में उबाल, राज्यपाल को ज्ञापन

रांची : सरकारी कंपनियों के कथित निजीकरण की योजना के खिलाफ श्रमिक संगठनों में आक्रोश उबल पड़ा है। पिछले दिनों ट्रेड यूनियनों और श्रमिक फेडरेशनों का देशव्यापी विरोध प्रदर्शन हुआ। राजधानी रांची में भी प्रदर्शन हुआ, जिसके बाद राज्यपाल को 31 सूत्री मागों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा गया। चार श्रम संहिता में संशोधन न करने, सार्वजनिक उपक्रमों और सार्वजनिक सेवाओं का निजीकरण बंद करने, कामगारों को न्यूनतम मजदूरी 26000 रुपए प्रतिमाह सुनिश्चित करने, सेवानिवृत्त कर्मचारियों को न्यूनतम पेंशन, सार्वकालिक कार्यों का ठेकाकरण बंद करने, अग्निपथ योजना रद्ध करने, सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने,आंगनबाड़ी, आशा सहिया, जलसहिया मध्याह्न भोजन कर्मी को न्यूनतम मजदूर और सामाजिक सुरक्षा, मनरेगा कार्यावधि का विस्तार, महंगाई पर रोक लगाने सहित अन्य मागें कीं। इस अवसर पर भुनेश्वर केवट, अशोक यादव, दामोदर वोध (राजस्थान), एमएल सिंह, लालदेव सिंह, प्रकाश विप्लव, एसके राव आदि उपस्थित रहे।

बोकारो में 18 जनवरी से लगेगा 19वां इस्पातांचल स्वदेशी मेला

संवाददाता

बोकारो : दो साल के कोरोनाकाल के बाद शहरवासियों में एक बार फिर स्वदेशी का अलख जगाने के उद्देश्य से स्वदेशी जागरण मंच बोकारो द्वारा आगामी 18 जनवरी से 25 जनवरी तक 19वां स्वदेशी मेला आयोजित किया जा रहा है। इसकी तैयारी जोरशोर से की जा रही है। इसी कड़ी में स्वदेशी मेला कार्यालय का उद्घाटन नगर के सेक्टर-4 स्थित सिटी सेंटर में किया गया। इसका उद्घाटन बोकारो विधायक बिरंची नारायण व बोकारो चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के संरक्षक संजय बैद ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम का संचालन दिलीप वर्मा ने किया। मंच के क्षेत्रीय संयोजक सचिन्द्र कुमार बरियार ने कहा कि हर वर्ष करोड़ों युवा बेरोजगार पैदा ले रहे हैं। इतने युवाओं को रोजगार देना किसी सरकार के बस की बात नहीं है, इसलिए युवाओं को स्वावलंबन की दिशा में पहल करनी चाहिए व स्वरोजगार से जुड़कर दूसरों के लिए रोजगार सृजन का जरिया बनने का प्रयत्न करें। उन्होंने कहा कि इस बार स्वदेशी मेला अखिल भारतीय स्वावलंबन अभियान को ध्यान में रखते हुए युवाओं के लिए बेहद खास होगा।

युवाओं से सीधा संवाद करने की आवश्यकता : बिरंची

मुख्य अतिथि विधायक बिरंची नारायण ने कहा कि वह शुरू से ही मंच के साथ जुड़े रहे हैं और स्वदेशी भावनाओं से ओतप्रोत हैं। उन्होंने कहा - भगवान का शुक्र है कि दो वर्षों बाद पुनः मेला का आयोजन होने जा रहा है। इस मेला को सार्थक और भव्य बनाने के लिए कृषि विभाग पशुपालन विभाग उद्योग विभाग सहित अन्य विभागीय को आमंत्रित कर युवाओं से सीधा संवाद करने की आवश्यकता है, ताकि आज की युवा स्वावलंबन की दिशा में बेहतर कार्य कर सकें। इस अवसर पर संजय बैद, कुमार संजय, केके बोराल, अरविंद सिंह, विवेकानंद झा, प्रेम प्रकाश, अवधेश कुमार, सौरव जायसवाल, शशांक शेखर, नवीन सिन्हा, प्रमोद कुमार सिन्हा, जयशंकर प्रसाद, प्रवीण चौधरी, मनीष श्रीवास्तव, बीपी सिंह आदि उपस्थित रहे।

पुपरी में बाबा नागेश्वर नाथ मंदिर का होगा कायाकल्प, भव्य निर्माण को ले संकल्पित हुए लोग

मदन मोहन ठाकुर

पुपरी : पुपरी स्थित बाबा नागेश्वर नाथ मंदिर और आसपास के क्षेत्र के जल्द ही कायाकल्प होगा। इसे लेकर मंदिर न्यास बोर्ड के लोग पूरी सक्रियता के साथ संकल्पित हो चुके हैं। सात सदस्यों के बोर्ड में वर्तमान अनुमंडल पदाधिकारी नवीन कुमार वर्ष 2020 से अध्यक्ष हैं। कोषाध्यक्ष महेशचंद्र गुप्ता, उपाध्यक्ष संजय प्रसाद, सचिव डॉ. ओम प्रकाश एवं सदस्यों में शंकर शर्मा, कविता बाजोरिया, श्याम राज, रमेश जालान, नवल किशोर चौधरी, उमा शंकर चौधरी की पूरी टीम तन-मन-धन से बाबा नागेश्वर नाथ मंदिर का भव्य निर्माण को संकल्पित दिख रही है।समय-समय पर आमलोगों की बैठक भी आयोजित कर परामर्श एवं पवित्र धन की व्यवस्था की जा रही है। आमजनों ने भी वर्तमान टीम पर भरोसा कर सहयोग शुरू कर दिया है। इस कारण मंदिर के चहुमुखी विकास की योजना को सफल होने में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी।

मिथिला डायरी

1968 में बाबा हुए थे अवतरित : जानकारों के मुताबिक 15 अक्टूबर 1968 को बाबा नागेश्वरनाथ अवतरित हुए थे। 26 जून 1970 को बिहार के तत्कालीन राज्यपाल बाबा नागेश्वर नाथ का दर्शन करने पुपरी पहुंचे। राज्यपाल के आगमन के बाद 1970 में प्रथम बाबा नागेश्वर न्यास बोर्ड का गठन हुआ। उस दिन से बाबा की पूरी देखभाल, पूजा-अर्चना, न्यास बोर्ड के दिशा-निर्देश में प्रारंभ हुआ, जो आज तक चला आ रहा है। पहले प्रखंड विकास पदाधिकारी इस बोर्ड के पदेन अध्यक्ष होते थे, लेकिन 1992 में पुपरी अनुमंडल बनने के बाद अनुमंडल पदाधिकारी बोर्ड के पदेन अध्यक्ष हो रहे हैं।

मंदिर प्रांगण के रूप में हुआ परिणत

नवीन कुमार, एसडीएम पुपरी की इस दिशा में बेहद अभिरुचि लिए जाने के कारण मंदिर प्रांगण के रूप में परिणत हो गया है। इस कारण महाशिवरात्रि, बसंत पंचमी के दिन नर-नारियों का भारी भीड़ जल बेलपत्र एवं पुष्प अर्पित करते देखे जाते हैं। बाबा नागेश्वर नाथ की महिमा देखने दूर दूर से लोग और पर्यटक भी आते जाते हैं। श्रावण मास और महाशिवरात्रि के समय तो यहां भक्तों का तांता लगा रहता है। मांगलिक कार्यों के लिए भी यह परिसर उपयोगी हो गया है ।दुखद बात यह रही कि 50 साल बीत गए, लेकिन बाबा का मंदिर भव्य निर्माण कराने एवं पर्यटक स्थल घोषित कराने की दिशा में ऊपरी के जनप्रतिनिधियों या पदाधिकारियों की अभी नहीं देखी गई, लेकिन जब जागो तब सवेरा वाली कहावत अब नवीन कुमार एसडीएम की पूरी टीम तहे दिल से इस दिशा में लगन से कार्य कर रही है। आने वाले समय में बाबा के भव्य मंदिर निर्माण का सपना पुपरी वासियों के लिए तरक्की और आपसी प्रेम का पैगाम देगा।

प्रेम और समर्पण से ही खुशहाल दाम्पत्य जीवन

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

आज के समय में जब पति-पत्नी के बीच छोटी-मोटी बातों पर मतभेद हो जाता है और कई बार अहंकार की लड़ाई इतना विशाल रूप धर लेती है, कि दोनों के बीच सम्बंध विच्छेद तक हो जाता है, उस समय यह जानना आवश्यक है कि वैदिक धर्म में पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन कैसा हो, इसका कुछ वर्णन इस प्रकार आया है:

समन्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ

-ऋग्वेद

1. ऋग्वेद के दसवें मंडल में आया यह मंत्र 'समापो हृदयानि नौ' के माध्यम से घोषणा करता है कि हम दोनों, दो पति-पत्नी भाव से एक हुए हैं, हमारा हृदय एवं मन जल के समान है। जैसे दो जल को मिला देने से एक हो जाता है, उनका गुण, स्वभाव एक हो जाता है, उसी प्रकार स्त्री-पुरुष विवाह बंधन में बंधने के बाद एक हो जाते हैं।

2. वायु के समान एकत्व की स्थिति- ऊपर आये श्लोक में 'सं मातरिश्वा' पति-पत्नी के बीच की एकरूपता का बोध कराता है, जैसे दो वायु एक रूप हो जाते हैं, वैसे ही विवाह बंधन में बंधकर दो प्राण एक हो जाते हैं। जैसे शरीर से प्राण का विच्छेद होने पर शरीर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार पति-पत्नी के प्राणों में से एक को भी कष्ट पहुंचता है तो दूसरा उसी अनुपात में व्यथित होता है।

3. श्लोक में आया 'सं धाता' इस बात का द्योतक है कि जैसे जगत को धारण करने वाला परमात्मा सब जगत को अच्छी तरह धारण करता है, उसी प्रकार हम दोनों एक-दूसरे को भली-भांति धारण एवं पोषण करें।

4. 'समुद्रेष्टी दधातु नौ' पति-पत्नी के बीच प्रेममय सम्बन्ध को निरूपित करता है। जैसे उपदेश देने वाले और उपदेश सुनने वाले के बीच प्रीतिकर सम्बन्ध होता है, बिल्कुल उसी प्रकार पति एवं पत्नी के मन और आत्मा के बीच प्रेम की डोर बंधी होती है। दोनों कभी एक-दूसरे के वचनों की अवहेलना करने वाले नहीं होते हैं।

पत्नी के लिए 'वामिनी' या 'भामिनी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। छान्दोग्य उपनिषद के चौथे खण्ड में भाम-नी या वाम-नी का अर्थ आत्मा बतलाया गया है, क्योंकि सृष्टि के सभी सौन्दर्यों में आत्मा अग्रणी है।

बाम का अर्थ रूप या शोभा है। आश्चर्यजनक सत्य यह है कि विवाह के बाद स्त्री पति के वामांग में स्थापित होती है। इस कारण उसे 'वामा' भी कहते हैं।

पति और पत्नी सोलमेट होते हैं। दोनों की आत्माओं के बीच तार जुड़ा होता है। इसलिए पुरुष जब अपनी गृह लक्ष्मी के साथ संयुक्त होता है, तभी वह पूर्ण हो पाता है। वास्तव में हर पुरुष के अन्दर नारायण अवस्थित हैं और हर स्त्री लक्ष्मी का रूप होती हैं। इसलिए पत्नी के लिए गृहलक्ष्मी शब्द का प्रयोग किया जाता है। जो व्यक्ति अपनी गृहलक्ष्मी का अनादर करेगा, जीवन में उसकी उन्नति हमेशा सशंकित रहेगी।

गृह लक्ष्मी- गृहिणी

गृह लक्ष्मी अर्थात गृहिणी और गृहिणी न हो तो गृह की सब व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है। गृहस्थी को एक वृक्ष मानें तो पत्नी उस वृक्ष का मूल अर्थात जड़ होती है। जब तक मूल नहीं है, तब तक वृक्ष का अस्तित्व ही नहीं होता। मूल अर्थात जड़ ही समग्र वृक्ष का भार वहन करता है। इस आधार पर हम क सकते हैं कि नारी गृह का मूल आधार होती है। उसके कन्धों पर ही पूरा परिवार खड़ा होता है। नारी के बिना यह स्वप्न साकार नहीं हो सकता। वृक्ष की जड़ तो केवल वृक्ष को खड़ा रखने तथा उसे भोजन पहुंचाने का कार्य करती है, किन्तु नारी न केवल जड़ का अर्थात परिवार का आधार अथवा परिवार के खड़े होने की परिकल्पना को साकार करने वाली होती है, अपितु संतानोत्पत्ति का कार्य अर्थात बीज व भूमि का कार्य करती है।

दाम्पत्य जीवन : संयोग और सहयोग

पुरुष और नारी के प्रेम पूर्वक संयोग से ही श्रेष्ठ दाम्पत्य जीवन का निर्माण होता है। इसी कार्य से सृष्टि में उत्पत्ति होती है और जब उत्पत्ति होती है, तभी वृद्धि संभव है। पति-पत्नी में मतभेद होना है, सामंजस्य की कमी होना, प्रेम की कमी होना दाम्पत्य जीवन की अपूर्णता है और इसका सीधा अर्थ है, जैसे बिना जल की नदी, बिना जड़ के वृक्ष, बिना शीतलता का चन्द्रमा।

पति-पत्नी के बीच सुखद वैवाहिक जीवन का आधार प्रेम ही होता है। इसके लिए सामंजस्य और सहयोग आवश्यक है और उसमें निरन्तर प्रेम तत्व प्रवाहित होना चाहिए। इस प्रेम तत्व के प्रवाह के लिए अनन्त चतुर्दशी को सम्पन्न करें लक्ष्मी-नारायण साधना।

श्रेष्ठ दाम्पत्य जीवन

श्रुति के वचनानुसार- दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं का समन्वय होने पर, अगाध प्रेम के व्रत का पालन करने वाले दंपती लक्ष्मी-विष्णु, सीता-राम, उमा-महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का श्रेष्ठ स्वरूप है।

शास्त्रों में श्रेष्ठ दाम्पत्य जीवन को वंशवृद्धि, मैत्रीलाभ, साहचर्य सुख, मानसिक रूप से परिपक्वता, दीर्घायु शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु अनिवार्य माना गया है। इसके अलावा सुखद दाम्पत्य जीवन से समस्याओं से जूढने की शक्ति मिलती है और प्रगाढ़ प्रेम सम्बन्ध से परिवार में सुख-शान्ति रहती है।

और जब परिस्थितियां विपरीत होती हैं तो गृहस्थ जीवन सरस न होकर कांटों से भरा लगता है और ऐसा लगने लगता है कि कहीं भाग जायें, सम्बन्ध विच्छेद कर लें, संन्यास ले लें अथवा जीवन का कोई अर्थ नहीं है। ऐसी स्थिति में लक्ष्मी-नारायण साधना सम्पन्न करने से दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। अपने जिद को नियंत्रित रखें। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं में कमी आएगी। पारिवारिक सुख में कमी हो सकती है। कार्यों में थोड़े विलम्ब हो सकते है।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य पर वात का प्रभाव पड़ सकता है। उच्चाधिकारियों के सहयोग में कमी हो सकती है। कार्यों के सफलता में देर होगी। दाम्पत्य जीवन मे प्रेम सौहार्द बनाकर रखें।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य अनुकूल रहेंगे। वाणी पर संयम रखें शिक्षा के क्षेत्र में सफलता के योग बनेंगे। उच्च अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होंगे । चल अचल संपत्ति में बढ़ोतरी होंगे । संतान की तरफ से अच्छे संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - स्वास्थ्य में सुधार होंगे। क्रोध पर संयम रखें। धार्मिक कार्यों के तरफ झुकाव बढ़ेंगे । शत्रु कमजोर होंगे। पारिवारिक जीवन मे थोड़े मतभेद हो सकते हैं। सप्ताह के मध्य में भाग्योदय की वृद्धि होगी।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वाणी से लाभ प्राप्त हो सकते है। मन प्रसन्न रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। खर्चे में वृद्धि होगी। मन में चंचलता रहेगी। भय का माहौल हो सकता है।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - स्वास्थ्य अनुकूल रहेंगे। कुटुम्बों से रिश्ते सुधर सकते हैं। तीर्थाटन के योग बनेंगे। धनागम या लाभ होगा। सुख में वृद्धि हो सकती है। सन्तान पक्ष से उम्मीद बढ़ेगी।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य पर मौसम के प्रभाव पड़ सकते हैं। सुख में थोड़ी कमी रहेगी। धन की प्राप्ति के योग बनेंगे। कार्य परिवर्तन का मन बना सकते हैं। लाभ कम प्रभावी होगा।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - स्थान परिवर्तन के योग बन सकते हैं। वाणी शुद्ध रखें। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यों में दान देने का अवसर प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। राज्याधिकारीयों से लाभ प्राप्त हो सकता है।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - स्वास्थ्य लाभ। वाणी एवं क्रोध पर संयम रखने की जरूरत है। लाभ प्राप्त के योग बन सकते हैं। भाग्योदय में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से लाभ प्राप्त अर्थात प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - स्वास्थ्य अच्छा होगा। समय की अनुकूलता आएगी। पारिवारिक रिश्तों पर ध्यान रखें। यात्रा के योग बनेंगे। मित्रों से सहायता मिलेगी। समस्त कार्यों में नजदीकियों के सहयोग प्राप्त होंगे।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। शत्रुओं में बढ़ोतरी होगी। लाभ योग बनेंगे। पारिवारिक जीवन मे सुख की बढ़ोतरी होगी। लाभ प्राप्त करने का समय चल रहा है। अनावश्यक यात्रा के योग बन सकते हैं।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - मौसम के परिवर्तन से स्वास्थ्य पर बुरे प्रभाव पड़ सकते हैं। सन्तान पक्ष की चिंता बढ़ सकती है। क्रोध पर संयम रखें। कार्य क्षेत्र में दबाव बढ़ेंगे। वाणी पर संयम रखें।

अधिक जानकारी के लिए
संपर्क करें- 7808820251

'अवनि से अंबर तक' - जीवन के साथ मन की तरंगों का जीवंत चित्रण

पुस्तक-समीक्षा

– डॉ. शेफालिका वर्मा
(साहित्य अकादमी पुरस्कृत, निवास- दिल्ली)

साहित्य समाज का दर्पण है और अब साहित्य संस्कार का दर्पण हो गया है। समाज रहा कहाँ? जहाँ एकात्मकता होती थी, एक दूसरे के साथ मिलकर दुःख-सुख बाँटते थे वह होता था समाज मगर अब? अब सभी सिर्फ अपने लिए है। समाज टूट रहा है, परिवार बिखर रहा-पर औरत का दर्द, मन की व्यथा मन में ही रह गयी है, यूँ लगता है जैसे समाज की सारी बुराइयों की जड़ वह खुद ही हो - यह आत्मग्लानि का भाव एक ओर तो उसमें वेदना के बीज बो रहा तो दूसरी ओर अपने अस्तित्व का भी बोध करा रहा '--हम भी कुछ हैं, यह ध्यान रहे---' सुप्रसन्ना जी के पद्य - संकलन 'अवनि से अंबर तक' जीवन की मेघमालाओं के मध्य मन के इन्द्रधनुषी रंगों में आलोकित हो रही है।

किन्तु, कभी कभी जब स्त्री ही स्त्री की दुश्मन हो उसे भला बुरा कहने लगती है, तो स्थिति विकट हो जाती है। इस तरह की कितनी भावनाएं वेदनायें लेकर सुप्रसन्ना जी की कवितायें जिंदगी के गीत गाती है, कभी हँसती-मुस्कुराती, कभी वेदना में डूब जाती है। इनकी कविताओं में बसन्त है, तो पतझड़ भी, कभी कभी तो दोनों साथ चलते हैं --

उन्होंने जिन्दगी में बहुत कुछ पाया, कभी प्यार तो कभी तकरार। कभी खुशी, कभी उदासी। जैसा कि इनकी कविताओं से प्रतीत होता है। वैसे भी नारियों के लिए लिखा ही गया है।

'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आँखों में पानी ---'

वास्तव में, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। नारी का जीवन दबे ढंके आज भी प्रतिशत में इसी स्थिति में ज्यादा है। एक ओर तो नारियां आकाश की ऊंचाइयों को छू रही है, दूसरी ओर उसकी आँखों में आँसू लबालब है, आंचल का दूध मातृत्व लिये आज भी है। आज भी नारी प्रताड़ित हो रही है कारण दहेज हो वा कि अहंकार हो पुरुषत्व का---

हां वो माँ थी
उसे पाषाण बनना था
कमजोर इन्सानों की तरह उसे रोना नहीं था ---

नारी की सहनशीलता की चरम सीमा है इन पंक्तियों में।

वास्तव में नारियाँ धरती होती है, कितने भी पैरों से रौंदते चलो, फिर भी फल-फूल ही उगाती है, हरियाली ही लोगों के जीवन में भरती है--

'--विश्वास के रंग का स्थायित्व सतत रहता है --वह
मौसम के रंग की तरह कभी नहीं बदलता ---
जो बदलते रंगों के बीच कभी नहीं ठहरता
हाँ विश्वास का रंग --'

कवयित्री की पीड़ा भरी ये पंक्तियाँ जैसे हृदय को चीर जाती हैं--

'--सच कहूं
स्त्री होना सहज न था ----- आदिकाल से ही गलत न होने पर भी
अहिल्या का पत्थर बन जाना....
वृन्दा का तुलसी बन.... सीता का कलंकित जीवन बिताना......
ना ना स्त्री होना सहज ना था ----'

एक अव्यक्त मूर्च्छना में भर जाती तन मन को-- स्त्री की व्यथा विगलित इन पंक्तियों को पढ़ कर ---

'----क्या मृत्यु तुम प्रत्यक्ष खड़ी थी, पाषाण सी मैं निहारूं ....'

दर्द का समन्दर -- स्त्री का जीवन -- एक सशक्त तरुवर से लता की तरह लिपटी रहती है स्त्री, किन्तु, जब सहारा देने वाला तरुवर ही अचानक गिर जाये, छिन्न भिन्न लता धरती पर बिखरी पड़ी रहती है ---

किन्तु, यशोधरा के शब्दों में ---

'अब कठोर हो वज्रादपि -कुसुमादपि हे सुकुमारी
आर्य पुत्र दे चुके परीक्षा अब है तेरी बारी ---'

और कवयित्री सुप्रसन्ना लेखनी हाथ में ले मातृत्व की गरिमा को अजर अमर कर जाती है। ...

वैसे भी स्त्री लेखन में स्त्रियों को जिन्दगी में बहुत सारी चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है। सिर्फ उसे मन की अपनी एक दुनिया मिलती है, जहां अपने मन के अनुसार सपनों के घरौंदें बनाती है, उसी में उछलती-कूदती रहती है। एक अंतर्द्वन्द निरन्तर उसके हृदय में चलता रहता है। अपनी अस्मिता की तलाश में बेचैन रहती है और यही बेचैनी कविता का सृजन कर जाती है। जिस तरह से माँ प्रसव-वेदना से छटपटाती रहती है, बच्चे के जन्म के बाद चैन की सांस लेती है ठीक वही प्रसव-वेदना की स्थिति कविता के जन्म से पहले कवियों की होती है और अपने मानस-शिशु के जन्म के उपरांत निष्कृति की सांस लेता है। तभी तो कोरोना को भी कवयित्री ने नहीं छोड़ा --

'---कोरोना है डरावना --पल पल मौत की खबर -----
मुझसे अब अराधना ---'

शब्द ब्रह्म है -- अतः कवयित्री ने बोलने लिखने में शब्दों के प्रयोग का भी अति रमणीय वर्णन किया है। कुल मिलाकर जीवन के साथ मन की तरंगें हर रूप में 'अवनि से अंबर तक' विशद विरल भावनाओं से सजा रही है।

आज किसी भी भाषा में महिला लेखन की बाढ़ सी आ गयी है। ऐसा भान होता है जैसे गार्गी, मैत्रेयी, भारती आदि का युग फिर से आ रहा हो, पर किसी भी साहित्य के इतिहास में महिला साहित्यकारों को शायद ही यथोचित स्थान मिला हो, खासकर आधुनिक काल के इतिहास में --- लेकिन यह तय है कि सबों की पहचान वक्त कराता है।

वर्जीनिया वुल्फ ने बहुत ही अच्छी बात कही है 'If you do not tell the truth about yourself, cannot tell it about other people' वास्तव में लेखन भी सच्चाई चाहती है।

कृतित्व और व्यक्तित्व की एकरूपता ही किसी भी हृदय को स्पर्श कर पाने की क्षमता रखती है।

आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि सुप्रसन्ना जी की इस कृति का स्वागत सुधि पाठकों के साथ प्रज्ञावान आलोचक भी चमत्कृत होंगे।

अशेष साधुवाद।

साइंस फिक्शन का नया अनुभव कराएगी 'अवतार 2', रिलीज से पहले करोड़ों की कमाई

जेम्स कैमरून की साल 2009 में आई सुपरहिट फिल्म 'अवतार' के सीक्वल 'अवतार 2' का दर्शक लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं। फाइनली ये इंतजार अब खत्म होने वाला है। 'अवतार 2' इस साल 16 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने को तैयार है और दर्शकों की बेसब्री का आलम ये है कि इस फिल्म की रिकॉर्ड एडवांस बुकिंग हो रही है। 'अवतारः द वे ऑफ वॉटर' की रिलीज के दस दिन पहले ही भारत में 2 लाख से ज्यादा टिकट एडवांस में बिक चुके हैं। फिल्म की प्री-सेल पिछले महीने शुरू हुई थी। जानकारी के मुताबिक, मंगलवार सुबह तक 8.50 करोड़ रुपए के टिकट बिक चुके हैं। कुल बिक्री में से 3.50 करोड़ ओपनिंग डे की है, जबकि बाकी शनिवार और रविवार के लिए है।

कोविड-19 के बाद भारत में 'स्पाइडर-मैन : नो वे होम' और 'डॉक्टर स्ट्रेंज 2' हॉलीवुड के टॉप प्री-सेलर रही हैं, दोनों ने 40 करोड़ से अधिक का एडवांस बुकिंग का बिजनेस किया था। 'अवतार 2' का क्रेज भी अजय देवगन की फिल्म 'दृश्यम' की तरह ही है, दर्शक ये जानने के लिए बेताब है कि फिल्म में आगे क्या हुआ होगा। अभी फिल्म की रिलीज में 9 दिन का समय बाकी है ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि 'अवतार 2 एडवांस बुकिंग' से नया रिकॉर्ड कायम कर सकती है।

फिल्म 'दृश्यम' की एडवांस बुकिंग की बात करें तो फिल्म ने रिलीज से पहले 4.5 करोड़ का बिजनेस कर लिया था। वहीं रणबीर कपूर और आलिया भट्ट स्टारर फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' ने 6 लाख टिकटों की एडवांस बुकिंग दर्ज की थी। 'अवतार 2' एक साइंस फिक्शन फिल्म है, जिसका बजट करीब 400 मिलियन डॉलर बताया जाता है।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल कई दृष्टि से देखो
चप्पा-चप्पा अलग परेखो
दृष्टि-दृष्टि की सृष्टि अलग है
हर हिस्से का जग जगमग है

हर हिस्सा जंगल का खिलखिल
बाँटे आनन्दों का पारावार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
वन हैं रक्षक, संकट मोचन
एक चुनौती भी हैं ये वन
जंगल हैं समझो अज्ञेय
अपरिमित हैं अपरिमेय

मन में प्रण ले कदम बढ़े तो
मस्ती में हो जाये जंगल पार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

दिव्य गुणों की खान होते हैं दिव्यांग, शिक्षा की मदद से बनें सशक्त : राष्ट्रपति

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथिके रूप में शामिल हुईं। राष्ट्रपति ने दिव्यांगजनों का सशक्तिकरण करने की दिशा में काम करने वाले व्यक्तियों, संस्थानों, संगठनों और राज्य/ जिला आदि को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और कार्यों के लिए वार्षिक राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए। इस समारोह में केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार, सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास अठावले, प्रतिमा भौमिक भी शामिल हुए।

राष्ट्रपति ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा - संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया है कि दुनिया में एक अरब से ज्यादा लोग दिव्यांग हैं, जिसका मतलब यह है कि दुनिया में लगभग प्रत्येक 8वां व्यक्ति किसी न किसी रूप में दिव्यांग है। भारत में दो प्रतिशत से ज्यादा लोग दिव्यांग हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि दिव्यांगजन अपना जीवन स्वतंत्र रूप से और सम्मान के साथ व्यतीत कर सकें। यह सुनिश्चित करना भी हमारा कर्तव्य है कि उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, वे अपने घरों और समाज में सुरक्षित रहें, उन्हें अपना करियर चुनने की स्वतंत्रता हो और उन्हें रोजगार के समान अवसर प्राप्त हों।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति और परंपरा में दिव्यांगता को ज्ञान प्राप्ति और उत्कृष्ट बनने में कभी बाधा नहीं माना गया है तथा प्रायः देखा गया है कि दिव्यांगजन दिव्य-गुणों से युक्त होते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे असंख्य उदाहरण हैं, जिनमें हमारे दिव्यांग भाईयों और बहनों ने अपने अदम्य साहस, प्रतिभा तथा दृढ़ संकल्प के माध्यम से अनेक क्षेत्रों में प्रभावशाली उपलब्धियां प्राप्त की हैं। पर्याप्त अवसर और सही वातावरण मिलने पर वे सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षा दिव्यांगजन सहित सभी लोगों के लिए सशक्तिकरण की कुंजी है। उन्होंने शिक्षा में भाषा संबंधी बाधाओं को समाप्त करने और दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा को ज्यादा से ज्यादा सुलभ बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी दिव्यांग बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए समान अवसर देने के लिए सक्षम व्यवस्था के महत्व को रेखांकित किया गया है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त किया कि श्रवण बाधित बच्चों के लिए कक्षा 01 से 06 तक की एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को भारतीय सांकेतिक भाषा में परिवर्तित किया गया है। उन्होंने कहा कि श्रवण बाधित छात्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करना एक महत्वपूर्ण पहल है।

राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार दिव्यांगजनों का सशक्तिकरण करने की दिशा में अनेक कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि उनके अनुसार, दिव्यांगजनों का सशक्तिकरण करने के लिए उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करना बहुत महत्वपूर्ण है। दिव्यांगजनों में सामान्य लोगों की तरह ही प्रतिभाएं और क्षमताएं मौजूद होती हैं और कभी-कभी उनसे कहीं ज्यादा होती हैं। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनमें सिर्फ आत्मविश्वास उत्पन्न करने की आवश्यकता है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों से आग्रह किया कि वे दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि जब हमारे दिव्यांग भाई-बहन मुख्यधारा में शामिल होकर अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे, तब हमारा देश और तेजी के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि दिव्यांगजन एक बहुमूल्य मानव संसाधन हैं और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी राष्ट्रीय विकास एजेंडा में दिव्यांगजनों के मुद्दों को बहुत प्राथमिकता देते हैं।प्रधानमंत्रीका आदर्श वाक्य समावेशी विकास, सभी का विकास और सभी का आत्मविश्वास है। सरकार ने दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में अधिनियमित किया है, जिसे 19.04.2017 से लागू किया गया है। इस अधिनियम में दिव्यांगजनों को सरकारी नौकरियों में 4 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान किया गया है।

उन्होंने यह भी कहा कि दिव्यांगजनों को सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करने के लिए सरकार ने 03.12.2015 को सुलभ भारत अभियान (एक्सेसिबल इंडिया कैंपेन) की शुरूआत की थी, जिससे दिव्यांगजन गरिमा के साथ अपना सार्थक जीवन व्यतीत कर सकें। इस अभियान के अंतर्गत सार्वजनिक भवनों, परिवहन प्रणालियों और सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया है। उनके द्वारा पहुंच संबंधित समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, विभाग ने उन समस्याओं का यथासंभव तीव्र और व्यवस्थित समाधान करने के लिए एक मोबाइल ऐप विकसित किया है।

सरकार ने श्रवण बाधित लोगों के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और भारत में सांकेतिक भाषा का निर्माण करने के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र (आईएसएलआरटीसी) की स्थापना की है। संस्थान द्वारा अन्य कार्यों के अलावा निरंतर सांकेतिक भाषा शब्दकोश तैयार किया जा रहा है जिसमें अब तक 10,000 से ज्यादा शब्दों को शामिल किया गया है। डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि इसके अलावा सरकार दिव्यांगजनों के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार करने के उद्देश्य से एक अद्वितीय दिव्यांगता पहचान पत्र परियोजना चला रही है और अब तक सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 713 जिलों में 84 लाख से ज्यादा यूडीआईडी कार्ड तैयार किए जा चुके हैं।

सरकार मध्य प्रदेश के ग्वालियर में दिव्यांग खेल केंद्र और सीहोर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान की भी स्थापना कर रही है। मंत्री ने दिव्यांग युवाओं और बच्चों की प्रतिभा तथा कौशल को उजागर करने के लिए मंत्रालय द्वारा आयोजित की जा रही'दिव्य कला शक्ति' के बारे में भी बात की। इस अवसर पर राजेश अग्रवाल,सचिव, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग और दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित हुए।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह संबंधी सभी बीमारियों के इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)
डा. प्रशान्त कुमार, एम.डी.एस.

CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY CASHLESS FACILITY
शिवम् हॉस्पीटल में
सेल के रिटायर्ड कर्मचारियों के लिए
मोतियाबिन्द का ऑपरेशन
एवं लेंस लगाया जाता है।
E-2, LAXMI MARKET, SECTOR-4, B.S.CITY-827004
PH: 06542-232623/233475, MOB: 7488090631

पुराने व जटिल रोगों से हैं परेशान?
होमियोपैथ से निजात पाने के लिये संपर्क करें-
प्रो. डॉ. काशीश्वर किशोर DHMS (Distinction), B.H.M.S (BU).
प्रो. भूपेन्द्र नारायण मंडल होमियोपेथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, सहरसा
पूर्व सदस्य- होमियोपैथिक मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
बैठने का स्थान : शॉपिंग सेन्टर, शॉप नं. 58, पहला तल्ला, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, बीएस सिटी
(प्रातः 9.30- दोपहर 12.15 एवं संध्या 5.30-6.30)
जर्मन होमियो प्वाइंट, एफ/9, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बीएस सिटी
(सोमवार से शनिवारः संध्या 7.00-8.30), रविवार (संध्या 5.00-8.30)
Mob.- 9431162319 (Consultation after appointment only).